Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

Original Article

आधुनिक युग में वारली चित्रकला - एक रोजगार की संधी

डॉ. संगमित्रा कोलारकर (मानवटकर)
गृह अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख व सह प्राध्यापिका, सेवादल महिला महाविद्यालय, नागपूर.
Email : sangamkolarkar@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170449
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 4|
Pp. 238-240
April 2025
Submitted: 06 Mar. 2025
Revised: 12 Mar. 2025
Accepted: 27 Apr. 2025
Published: 30 Apr. 2025

सारांश :-

आदिवासी वारली कला कलात्मक अभिव्यक्ति का एक अनूठा रूप है जो भारत में विभिन्न स्वदेशी समुदायों की सांस्कृतिक विरासत में गहराई से निहित है। वारली समुदाय सदियों से कला के विशिष्ट रूपों का निर्माण करते है और उनकी कला कृतियों ने अपनी सौंदर्यात्मकता और सांस्कृतिक महत्व के लिए दुनिया भर में अपना स्थान प्राप्त किया है। वारली आदिवासियों ने 'वारली चित्रकला' में न केवल अपनी परम्पराओं और विरासत को संरक्षित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि भारत की सामाजिक आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रस्तुत अध्ययन 'वारली चित्रकला, वारली आदिम समुदाय के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास पर प्रकाश डालता है तथा वारली कला के ऐतिहासिक उत्पत्ति और कलात्मक विशेषताओं का अध्ययन करता है। पारंपारिक भित्ति चित्रों से लेकर आधुनिक युग में प्रचलित होने तक के विकास पर प्रकाश डालता है। आधुनीकीकरण और वैश्वीकरण के साथ वारली चित्रकला में बहुत बदलाव आया है। आय उत्पादक गतिविधी के रूप में वारली कला की दृश्यता, विपणन, क्षमता और सुधार के लिए सुझावों को प्रस्तावित करता है।

प्रस्तावना :-

वारली कला कलात्मक अभिव्यक्ति का एक अनूठा रूप है जो भारत में विभिन्न स्वदेशी समुदायों की सांस्कृतिक विरासत में गहराई से निहित है। वारली आदिम समुदाय सदियों से कला के विशिष्ट रूपों का निर्माण करते है और उनकी कला-कृतियों ने अपनी सौंदर्यात्मकता और सांस्कृतिक महत्व के लिए दुनिया भर में अपना स्थान प्राप्त किया है। वारली आदिवासीयों ने वारली चित्रकला में न केवल अपनी परम्पराओं और विरासत को संरक्षित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि भारत की सामाजिक आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

वारली चित्रकला भारत के पश्चिमी महाराष्ट्र राज्य की प्रसिध्द चित्रकला है। यह मुंबई के उत्तरी बाहरी इलाके में पायी जानेवाली वारली समुदाय द्वारा विकसित एक प्राचीन और समृध्द कला है। यह अपनी सादगी और गहन भावनाओं के लिए मानी जाती है। इस चित्रकला में दुनिया और जीवन की लय के प्रति सम्मान उनके चित्र कलाओं से परिलक्षित होते है तथा एकजुटता की भावना और सामाजिक जीवन को दर्शाते है।

वारली चित्रकला का अर्थ :-

वारली शब्द की उत्पत्ति 10 वीं शताब्दि ई.स.वी. या उससे पहले हुई थी। वारली शब्द का अर्थ है, "जोती गई भूमि का एक छोटा टुकडा"। वारली चित्रकला प्रकृति और जंगल के साथ जनजातियों के सह अस्तित्व से प्रेरित है तथा वारली संस्कृति मातृ प्रकृति की अवधारणा पर केन्द्रित और प्रकृति के तत्व अकसर केन्द्र बिंदू होते है जो वारली चित्रों में समानता पाते है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. संगमित्रा कोलारकर (मानवटकर), गृह अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख व सह प्राध्यापिका, सेवादल महिला महाविद्यालय, नागपूर.

Quick Response Code:
Website:
https://jrdrvb.org/
DOI:10.5281/zenodo.15656515
OPEN ACCESS

How to cite this article
कोलारकर (मानवटकर), . संगमित्रा . (2025). आधुनिक युग में वारली चित्रकला - एक रोजगार की संधी. Journal of Research & Development, 17(4), 238–240. https://doi.org/10.5281/zenodo.15656515

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

विषय का चुनाव :-

वारली चित्रकला के ऐतिहासिक उत्पत्ति और कलात्मक विशेषताओं का अध्ययन करता है। आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के साथ वारली चित्रकला में बहुत परिवर्तन हुये है। जिसमें आज रोजगार को बढावा मिल रहा है, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का आर्थिक विकास संभव है। प्रस्तुत अध्ययन "आधुनिक युग में वारली चित्रकला - एक रोजगार की संधी" विषय का चुनाव किया गया है।

उद्देश्य :-

1. वारली चित्रकला की विशेषताओं का अध्ययन करना।
2. वारली चित्रकला के चित्रों के महत्व को जानना।
3. आधुनिक युग में वारली चित्रकला में रोजगार के अवसरों का अध्ययन करना।

अध्ययन पध्दती :-

प्रस्तुत शोध निबंध पूर्ण रूप से वर्णनात्मक है, एवं द्वितीय संभको पर आधारित है। यह संदर्भ ग्रंथ, वेबसाईट, इंटरनेट, शोधपत्रों पत्रिकाओं आदि साधनों का उपयोग कर निष्कर्ष निकाले गये है।

वारली चित्रकला की मुख्य विशेषताएँ :-

1. वारली चित्रकला महाराष्ट्र राज्य में उत्तरी सहयाद्री के वारली आदिवासी लोगों की चित्रकला है। भारत के सबसे बडे महानगर के निकट होने के बावजूद, वारली आदिवासी आधुनिक शहरीकरण के सभी प्रभावों से दूर रहते है।
2. वारली चित्रकला का विषय भगवान पालघाट के विवाह को समाहित करता है। यह संस्कृति प्रकृति की अवधारणा पर केन्द्रीत है और इसके तत्व अकसर चित्रकला में दर्शाए गए केंद्र बिंदु होते है।
3. वारली चित्रकला के मुख्य विषय सर्पिलों में और खुले घेरे में नृत्य करने वाले लोगों के इर्द-गिर्द घूमते है।
4. वारली कलाकार अपनी मिट्टी की झोपडियों का उपयोग चित्रों की बैकग्राउंड के रूप में करते है, उसी तरह जैसे प्राचीन लोग गुफाओं को अपने कॅनवस के रूप में इस्तेमाल करते थे। मुख्यत: यह चित्रकारी दीवारों पर की जाती थी लेकिन धीरे-धीरे इसे मिट्टी के बर्तन, कपडा, बांस इत्यादि जैसे अन्य वस्तुओं पर खींचने लगे थे।
5. वारली चित्रकला में केवल लाल या भूरे रंग और चावल के पेस्ट से बने सफेद रंग का उपयोग किया जाता था। समय के साथ-साथ चित्रों की पृष्ठभूमि के रंगों में काले, नीले, ओरछा, मिट्टी का कीचड, ईट लाल, हीना जैसे रंग शामिल होने लगे थे।
6. प्राचीन काल में केवल सवासिनी महिलाएँ द्वारा चित्रकला की जाती थी, बार में पुरूषों में भी स्थानांतरित हुई थी। आमतौर पर मानव और जनवरों की छबियों के साथ-साथ दैनिक जीवन के दृश्यों को एक ढीले लयबध्द पॅटर्न में चित्रित किया गया है।
7. यह चित्रकला शिकार, नृत्य, बुवाई और कटाई जैसी गतिविधियों में लगी मानव आकृतियों के दृश्यों को दर्शाती है। ये अल्पविकसित दीवार पेंटींग चित्रकला बुनियादी ज्यामित्तिय आकृतियों में एक वृत्त, एक त्रिकोण, बिंदु और चौकोनों का उपयोग करती है।

वारली चित्रकला के चित्रों का महत्व :-

चित्रों के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वारली चित्रकला आदिवासीयों के मूल जीवन और उनके जीवन को दर्शाती है। यह जनजातियाँ समय चक्र में विश्वास करती है। इसलीए इन आदिम समुदाय के चित्रकला में उत्सव और आनंद झलकता है। ऐसा कहा जाता है कि वारली महिलाऐं शादी के दौरान अपनी दिवारों को खुशियों और समारोहों को दर्शाने के लिये चित्रकला करती थी। इसलिए दीवारों पर की गई चित्रकला को शुभ माना जाता है। वारली चित्रकला में प्राकृतिक जीवन से संबंधित वनस्पतियों, जीवों और समारोहों के डिझाइनों से प्ररिलक्षित होती है। वारली चित्रकला इतनी प्रसिध्द हो गइै है कि इन्हें कागजों पर भी तैयार किया जाता है और देशभर में बेचा जाता है।

आधुनिक युग में वारली चित्रकला में रोजगार के अवसर

आधुनिक युग में वारली चित्रकला अब सिर्फ पारम्पारिक मिट्टी की दीवारों तक सीमित नही रह गई, यह घर की सजावट के उद्योग में बड़े पैमाने पर फैल चुकी है और दिनोदिन बढती ही जा रही है। यह चित्रकला बर्तनों, फूलदानों से लेकर पर्दो, चादरों, थैलियाँ, पर्स से आदि के चित्रों तक तेजी से बढ गई है। कपडा और परिधान उद्योग भी इस सुंदर कला की ओर आकर्षित है। घर की सजावट से लेकर सड़क पर या फैशन शो के रैंप पर महिलाओं द्वारा सजी वारली चित्रकला सबकों आकर्षित करती है। अपनी लोकप्रियता के कारण इसे आधुनिक डिजाइन के साथ इस चित्रकला को जोडा जा रहा है। वारली चित्रकला की बढती मांग ने स्थानीय कलाकारों और कारीगरों के लिए एक बाजार तैयार किया है। जो इन कला रूपों में माहिर है। वे अपनी कला का उत्पादन और विक्री करते है, या तो गॅलरी, प्रदर्शनीयों या ऑनलाई प्लेटफॉर्म के माध्यम से रोजगार के अवसर उपलब्ध है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाले गये है कि - वारली चित्रकला, वारली आदिम समुदाय तक ही सीमित नही रही। यह मानव जाति के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के ऐतिहासिक उत्पत्ति और कलात्मक विशेषताओं के कारण दुनिया में लोकप्रिय हुयी। आधुनीकीकरण और वैश्वीकरण के साथ वारली चित्रकला में बहुत बदलाव आया है। वारली कलाकारों को बढावा देने के लिए उनकी बाजार तक पहुंच और उनके कौशल्य विकास विपणन क्षमता ऑनलाईन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है।

अंतत: प्रस्तुत अध्ययन एक समग्र दृष्टिकोन के साथ साथ सांस्कृतिक संरक्षण, आर्थिक सशक्तिकरण के साथ वारली कारीगरों, व्यवसायीयों के लिए एक समृध्द भविष्य सुरक्षित करता है। साथ ही साथ आनेवाली पीढ़ियों के लिए आजीविका की सिफारिशे प्रस्तावित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. www.https://hi.wikipedia.org
2. www.https://prepp.in
3. www.https://testbook.com
4. https://www.warli.in